UG study material for students of History

Subject : History

Class : B.A. Part III (Hons.)

Paper : VII

Topic : ईरान के आधुनिकीकरण में रजा शाह पहलवी का योगदान
(Contribution of Reza shah Pahlavi of the modernization of Iran)

By : Dr. Rajiv Nayan

Associate Professor,

Deptt. of History,

Jagjiwan College, Ara
(V.K.S.U, Ara)

Email : rajivnayan03@gmail.com

Scanned by CamScanner

DATE

ईरान के आधुनिकीकरण में रजा शाह पहलवी का योगदान (Contribution of Reza Shah Pahlavi of the modernization of Iran)

बीसवीं शताब्दी के आगमन के पूर्व तथा इसी शताब्दी के प्रथम दशक तक ईरान रूस और ब्रिटेन के साम्राज्यवादी संघर्ष का मुख्य अखाड़ा रहा। 1907 ई० में रूस और ब्रिटेन में एक संधि हुई, जिसके द्वारा ईरान रूस और ब्रिटेन के बीच 'प्रभाव क्षेत्र' में बाँट लिया गया और इस प्रकार अन्य एशियाई देशों की तरह ईरान का शोषण भी शुरू हो गया। 19 वीं शताब्दी में ईरान में भी यूरोप से राष्ट्रीयता की लहर पहुँची थी, लेकिन इसने ईरान की राजनीति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डाला।

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद ईरान की राजनीतिक दशा बड़ी बुरी थी। युद्धोपरांत पश्चिमी एशिया में ब्रिटेन की शक्ति बहुत बढ़ गयी थी। ब्रिटेन ने ईरान के साथ 9 अगस्त, 1919 ई० में एक संधि की, जिसके अनुसार ईरान के सैनिक और वित्तीय मामलों पर ब्रिटेन का प्रभुत्व कायम हो गया।

इसी अव्यवस्था की स्थिति में ईरान के राजनीतिक रंगमंच पर रजा खाँ का आगमन हुआ। वह ईरान की एक टुकड़ी ईरान की सेना (Iranian Cossack Division) का सेनापति था। फरवरी, 1921 ई० में उसने षड्यंत्र करके ईरान के पुराने कजार राजवंश के संरक्षण वाली सरकार का तख्ता पलट दिया और स्वयं ईरान की सेना का प्रधान सेनापति बन गया। उसका सहयोगी मित्र जियाउद्दीन (क्रांतिकारी विचारों का संरक्षक और महान सुधारक) ईरान का प्रधानमंत्री बना। कजार राजवंश का सुल्तान अहमद शाह अब भी ईरान का राजा रहा, लेकिन वास्तविक शक्ति अब

Impressions

PAGE

Scanned by CamScanner

DATE

रजा खाँ तथा जियाउद्दीन के हाथों में आ गयी थी। तीन महीनों के बाद जियाउद्दीन से रजा खाँ का झगड़ा हो गया। फलतः, रजा खाँ ने उसे ईरान छोड़ने पर मजबूर कर दिया। अब रजा खाँ ही देश का सर्वेसर्वा था। 1923 ई० में वह देश का प्रधानमंत्री बना और 31 अक्टूबर, 1925 को उसने अहमद शाह को गद्दी से उतार दिया। उस समय रजा खाँ गणतंत्र के विचारों से प्रभावित था और ईरान में गणराज्य की स्थापना करना चाहता था, लेकिन मुल्लाओं ने इसका विरोध किया और तब रजा खाँ को अपना विचार बदलना पड़ा। चूँकि भगोड़ा सुल्तान अहमद शाह अधिकतर समय फ्रांस में ही बिताता था और शासन में उसकी कोई रुचि नहीं थी, इसलिए ईरान की संसद (मजलिस) ने 13 दिसम्बर, 1925 ई० में रजा खाँ को ईरान की गद्दी पर आरूढ़ कर दिया। रजा खाँ ने 'रजा शाह' की उपाधि लेकर ईरान में शासन करना आरंभ किया। उसने जिस राजवंश की नींव डाली, वह 'पहलवी वंश' कहा गया। इसलिए इसको रजाशाह पहलवी के नाम से जाना जाता है।

रजा शाह एक कुशल प्रशासक और क्रांतिकारी सुधारक था। उसका मुख्य ध्येय ईरान को नवीन एवं आधुनिक राष्ट्र बनाना था। वह मुस्तफा कमाल पाशा से अत्यधिक प्रभावित था और उसकी नीति का अनुकरण करना चाहता था। तुर्की की तरह वह भी ईरान को विदेशी प्रभाव से मुक्त रखना चाहता था एवं पश्चिमी तौर-तरीकों को अपनाकर ईरान को आधुनिक बनाना चाहता था। इसके लिए रजा शाह ने निम्नलिखित कार्य किये—

(1) सेना में सुधार— रजा शाह सर्वप्रथम अपनी राजनीतिक स्थिति को सुरक्षित करना चाहता था। इसके लिए उसने सेना का

Scanned by CamScanner

पुनर्गठन आवश्यक समझा। अभी तक ईरानी सेना का संगठन किसी निश्चित नियम के अनुसार नहीं किया जाता था, लेकिन रजा शाह ने इसके संगठन को नियमित किया। सैनिकों को समय पर वेतन मिलने लगा और उनके बीच अनुशासन लाया गया। रजा शाह ने सर्वप्रथम अनिवार्य सैनिक शिक्षा और सैनिक-सेवा की पद्धति प्रारंभ की। इस प्रकार, यूरोप की सेना अत्यंत आधुनिक बन गयी। अपनी स्थिति को दृढ़ करने में रजा शाह को इस सेना से बड़ी मदद मिली। उसने इसी सेना के सहारे अपने सारे विरोधियों का दमन किया। कुचुक खाँ, खोरखाना, अजरबैजान तथा कुर्द जाति के विद्रोहों को रजा शाह ने पूरी तरह दबा दिया और ईरान पर निरंकुश रूप से शासन करता रहा।

(2) आर्थिक सुधार – रजा शाह ने ईरान की आर्थिक दयनीयता की ओर ध्यान दिया। ईरान की हालत प्रथम विश्व युद्ध और विदेशी हस्तक्षेप के कारण अत्यंत बुरी हो गयी थी। रजा शाह का विश्वास था कि आर्थिक सुधार से दो तरह के फायदे होंगे। एक तो देश की आन्तरिक आर्थिक दशा सुधरेगी और दूसरे ईरान विदेशियों पर आर्थिक मदद के लिए आश्रित नहीं रहेगा। इसे अच्छी तरह से मालूम था कि ईरान के आर्थिक कोष के दिवालियापन के चलते ही कजार वंश के शाह को पराजय हुई थी। आर्थिक क्षेत्र में सुधार लाने के लिए इसने अमेरिका की सहायता ली और श्री आर्थर चेस्टर मिल्स पौघ (Arthur Chester Mills Paugh) नामक एक अमेरिकन विशेषज्ञ को ईरान आमंत्रित किया। मिल्स पौघ 1927 ई० तक

Impressions

Scanned by CamScanner

ईरान की सरकार का विशेष अधिकार रहा। उसने ईरान की आय में वृद्धि के अनेक प्रयास किये। उसके द्वारा तैयार की गयी विभिन्न योजनाओं के परिणामस्वरूप ईरान की आय में काफी वृद्धि हुई। 1927 ई० में मिस्टर डे द्वारा त्यागपत्र देने और अमेरिका लौट जाने के उपरांत रजा शाह ने जर्मनी के अर्थशास्त्री डॉ० लिण्डेन ब्लाट (Dr. Linden Blatt) को ईरान के राष्ट्रीय बैंकों के संगठन के लिए 1928 ई० में नियुक्त किया। परिणामस्वरूप ब्रिटिश अधीनस्थ इम्पीरियल बैंक की जगह ईरान का राष्ट्रीय बैंक नोट छापने लगा। आर्थिक उन्नति के लिए सरकार ने जर्मनी के विशेषज्ञों की सहायता से ईरान में उद्योग-धंधे संबंधी अनेक कारखाने खोले और वैदेशिक व्यापार को बढ़ावा दिया। रजा शाह ने देश के औद्योगीकरण का वृहत् प्रयास किया और यहाँ तक कि अपनी वैयक्तिक संपत्ति को भी इस कार्य में लगाया। स्वयं रजा शाह के नाम अनेक होटल भी उसने देश में कई शहरों तथा अनेक भवनों का निर्माण करवाया। सड़क बनाने का उद्योग चालू किया गया। खनिज तेल के चलते ईरान को बड़ा लाभ हुआ। तेल उद्योग पर से विदेशी प्रभाव को समाप्त करने का प्रयास किया गया। इस तरह, रजा शाह ने आर्थिक सुधार करके देश को सुदृढ़ बनाया। फलतः, ईरान को पहले-पहल एक मजबूत आर्थिक आधार मिला।

(3) आवागमन में सुधार – रजा शाह ने ईरान में आवागमन के साधनों में सुधार पर काफी ध्यान दिया। उस समय इसकी स्थिति असंतोषप्रद थी। ट्रांस-ईरानियन रेलवे (Trans Iranian Railway) का निर्माण किया गया जिसने ईरान को कास्पियन सागर तथा पर्सियन गल्फ से जोड़ दिया। रजा शाह का ऐसा विश्वास था कि आवागमन के विकास और

Impressions
PAGE
Scanned by CamScanner

प्रगति पर ही ईरान की प्रगति निर्भर करती है। दूरस्थ भू-भागों पर केन्द्रीय सरकार का प्रभुत्व, देश की सुरक्षा और उसकी व्यापारिक तथा आर्थिक उन्नति वगैरह सबकुछ आवागमन के साधनों पर ही निर्भर थी। ट्रांस-ईरानियन रेलवे के निर्माण के लिए उसने किसी विदेशी राज्य से किसी प्रकार की आर्थिक मदद नहीं ली। रजा शाह ने ईरान की चाय और चीनी पर विशेष टैक्स लगाये और उसी टैक्स से रेलवे का निर्माण किया। 1927 ई० में ट्रांस-ईरानियन रेलवे के निर्माण का कार्य आरंभ किया गया जो 1939 ई० में बनकर तैयार हुआ। हालाँकि इसके निर्माण-कार्य में विदेशी अभियंताओं की मदद जरूर ली गयी थी। रजा शाह ने ईरान में अनेक महत्वपूर्ण सड़कों का भी निर्माण करवाया और वायु मार्गों के विकास पर भी ध्यान दिया। इसके लिए जर्मनी से सहायता ली गयी। परिणाम यह हुआ कि 1927 ई० से लेकर 1932 ई० के बीच ईरान के प्रसिद्ध शहरों और राजधानी तेहरान के बीच पैसेन्जर और मेल हवाई जहाज उड़ने लगे। राजकीय हवाई मार्गों के विकास के लिए केन्द्रीय सरकार ने अतिरिक्त आर्थिक सहायता दी। ब्रिटेन द्वारा स्थापित राजकीय हवाई जहाज भारत और ईरान के बीच उड़ने लगे। इसी प्रकार टेलिग्राफ कंपनी (डाक-तार कंपनी) का भी विकास हुआ। इस विभाग पर ईरान की सरकार ने ब्रिटेन के हाथों से अधिकार लेकर अपना अधिकार कायम कर लिया।

(4) शिक्षा में सुधार — रजाशाह ने ईरान की शिक्षा की ओर भी विशेष ध्यान दिया। युद्ध के समय से ही उसने शिक्षा में सुधार लाना आरंभ कर दिया।

Scanned by CamScanner

अपर प्राथमिक स्कूल की शिक्षा बच्चों के लिए अनिवार्य कर दी गयी। यह सही है कि शिक्षकों तथा अर्थ की कमी के चलते यह योजना कार्यरूप में काफी सफल न हो सकी, पर सारे ईरान में स्कूलों का जाल बिछ गया। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही ईरान में शिक्षण संस्थाओं की भी स्थापना की जाने लगी। लेकिन, शिक्षा के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित हुआ— तेहरान में विश्वविद्यालय की स्थापना जिसमें छः विभिन्न संकायों (Six faculties) की पढ़ाई होने लगी। विश्वविद्यालय के भवनों को आधुनिक ढंग की शैलियों पर निर्मित किया गया। कला, विज्ञान, अर्थशास्त्र, धर्म एवं अन्य संकायों की पढ़ाई प्रारंभ की गयी। धर्म की पढ़ाई हेतु इसे एक अनिवार्य फैकल्टी बना दिया गया। इस धार्मिक सहयोग का परिणाम यह हुआ कि विदेशी मिशनरियों द्वारा स्थापित स्कूलों का महत्व घटने लगा। बालचर (Scout) को बढ़ावा दिया गया और लड़कियों को भी Scout बनाने के लिए प्रेरित किया गया।

(5) महिलाओं की स्थिति में सुधार— रजा शाह नारी-स्वतंत्रता का बहुत बड़ा समर्थक था। अभी तक ईरान की स्त्रियाँ परदे में रहती थीं। देश में शिक्षा का प्रसार होने के कारण स्त्रियाँ स्वयं इस प्रथा से मुक्त होने लगीं और रजा शाह ने उन्हें काफी प्रोत्साहित किया। पुरुषों के तलाक संबंधी विशेषाधिकार समाप्त करके नारियों को समान सामाजिक अधिकार प्रदान किया गया। स्त्रियाँ अब सरकारी पदों पर काम कर सकती थीं। वे पश्चिमी पोशाक पहन सकती थीं। बुरके का व्यवहार कानून बनाकर बंद कर दिया गया। 1935 ई० में मजलिस (ईरानी संसद) ने एक कानून बनाकर औरतों को यूरोपियन पोशाक पहनना कानूनी घोषित कर दिया।

Impressions

Scanned by CamScanner

(6) परिधान में सुधार – रजा शाह ने ईरान निवासियों की वेशभूषा की ओर भी ध्यान दिया। 1928 ई० में कानून पारित करके पूर्वी पोशाकों के व्यवहार को रोक दिया गया। फैज टोपी और पगड़ी को समाप्त कर दिया गया और उसकी जगह पहलवी हैट पहना जाने लगा। प्रत्येक पुरुष के लिए इस हैट का पहनना अनिवार्य था। इसके बाद इस टोप को हटाकर यूरोपीय ढंग का टोप पहनना अनिवार्य कर दिया गया। रजा शाह के इस सामाजिक हस्तक्षेप से यत्र-तत्र क्रांति भी हुई, पर वह दबा दी गयी। अब ईरान के लोग आधुनिकीकरण के सिद्धांत को अपनाने लगे थे और पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगने लगे थे।

(7) धर्म में सुधार – रजा शाह के सुधार-कार्य केवल प्रौद्योगिकी, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर तक ही नहीं थे, अपितु धर्म भी प्रभावित हुआ। अब तक ईरान में अपराधों का निर्णय धार्मिक संस्थाओं द्वारा होता था। रजा शाह ने इन संस्थाओं का उन्मूलन किया और फ्रांस की न्याय-व्यवस्था को अपनाया। तत्पश्चात् राज्य को धर्म से पृथक रखकर उसे धर्मनिरपेक्ष बनाने का प्रयास किया गया। परंतु तुर्की की तरह वहाँ सफलता नहीं मिली। रजा शाह यह नहीं चाहता था कि ईरान की राजनीति और धर्म में किसी प्रकार का संबंध कायम हो। ईरान के संविधान ने यह घोषित किया, "ईरान का धर्म इस्लाम है पर संप्रदाय (sect) जफारिया है। ईरान के शाह को चाहिए कि इस सिद्धांत में विश्वास करे और इसका प्रचार करे।" मुल्ला और मौलवियों से धार्मिक प्रश्नों पर परामर्श लेने के लिए मजलिस ने कानून पारित किया।

Scanned by CamScanner

पर यह आवश्यक नहीं था कि उनके परामर्श को स्वीकार किया जाय।

(8) भाषा में सुधार - कमाल पाशा की तरह रजा शाह ने भाषा में भी सुधार लाना चाहा। ईरान की भाषा पर अरबी भाषा का गहरा प्रभाव था। अरबी प्रभाव से इसे मुक्त करने के लिए 1935 ई० में 'ईरानी साहित्य अकादमी' (Iranian Academy of Literature) की स्थापना की गयी। लेकिन, तुर्की की तरह वर्णमाला में सुधार लाने का प्रयास नहीं किया गया। यह कहा गया कि ईरान की भाषा फारसी (Persian) है और अरबी भाषा ईरानियों के लिए उचित नहीं है। 1935 ई० में देश का नाम फारस से बदलकर ईरान रखा गया।

इनके अतिरिक्त, सरकार ने जन-स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दिया। आधुनिक ढंग के कई अस्पताल खोले गये। मजदूरों की दशा सुधारने के लिए 1938 ई० में एक फैक्ट्री अधिनियम (Factory Act) पारित किया गया। ईरान की न्याय-व्यवस्था में भी कई सुधार किये गये। देश में फ्रांसीसी न्याय-व्यवस्था लागू की गयी और धार्मिक न्यायालयों को सभी पुराने अधिकारों से वंचित कर दिया गया।

हालाँकि, रजा शाह के विभिन्न सुधारों (जैसा - सामाजिक एवं धार्मिक) का ईरान में यत्र-तत्र विरोध भी हुआ। लेकिन, उसने इन विरोधों का दमन कर दिया। दैनिक समाचारपत्रों से कहा गया कि वे सरकार के सुधारों का प्रचार करें। 1940 ई० में तेहरान में एक रेडियो स्टेशन खोला गया, जिसका मुख्य उद्देश्य रजा शाह के सुधारों का प्रचार करना था।

इस प्रकार, कहा जा सकता है कि रजा शाह ने ईरान के उत्थान के लिए काफी प्रयास किया। उनके

Scanned by CamScanner

विभिन्न सुधारों के फलस्वरूप ईरान एक आधुनिक राज्य बना। पश्चिमीकरण का इसका प्रभाव काफी व्यापक रहा, लेकिन ईरान की तुलना तुर्की से करने पर कहना पड़ेगा कि उसे मुस्तफा कमाल पाशा की तरह सफलता नहीं मिली। इसका एक कारण यह भी था कि रजा शाह कमाल पाशा की तरह शिक्षित नहीं था। साथ ही, उसका देश तुर्की की अपेक्षा अत्यंत पिछड़ा हुआ था। रजा शाह मौजी प्रवृत्ति का भी था। वह कमाल पाशा की तरह निःस्वार्थ भाव से काम करने वाला व्यक्ति नहीं था। यदि उसमें कमाल पाशा का यह गुण होता तो उसे और ज्यादा सफलता मिल सकती थी। दूसरी बात, ईरान और तुर्की की भौगोलिक स्थिति में भी अंतर था। तुर्की यूरोप से बहुत निकट था और उसके निवासी बहुत दिनों से यूरोप के संपर्क में रहते आये थे, इसलिए कमाल पाशा को तुर्की के यूरोपीकरण में बहुत सुविधा हुई; जबकि ईरान यूरोप से बहुत दूर था और इसकी भौगोलिक बनावट भी अनुकूल नहीं थी। ईरान में विविध जातियों की विविध परम्पराएं थीं जो क्रांतिकारी सुधार-कार्यों के अनुकूल नहीं थीं। ईरान की मजलिस पर धर्म का अत्यधिक प्रभाव था। मजलिस के सदस्य कोई ऐसा क्रांतिकारी कदम नहीं उठाना चाहते थे, जो इस्लाम के सिद्धांतों का उल्लंघन करे। यह भी देखना होगा कि सुधार-कार्यों हेतु रजा शाह को बहुत कम समय मिला। ईरान में प्रथमः विश्वयुद्ध के बहुत बाद सुधार-कार्य आरंभ हुए और जब इसमें तीव्रता आयी तो द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया। इस अराजकतापूर्ण स्थिति में सुधार की सारी योजनाएँ शिथिल पड़ गयीं।

By: Dr. Rajiv Nayan
Associate Professor, Deptt. of History,
Jagjiwan College, Ara

Scanned by CamScanner